पर्वत रे

डॉ. श्री प्रसाद

पर्वत ऊपर उठे
उठ रहे पर्वत रे
बरसा पानी टप-टप
टप-टप शर्बत रे

एक घास ने सिर
उचकाया, पानी आ
बरस पड़ा बादल
पानी हर और हुआ

खेल रहे हैं बादल
मोर कबूतर बन
कहीं शेर हैं, बन्दर भालू
घनन घनन

अँधियारा हो गया, रात
हो गई घनी,
काले रंग की चादरिया
हर ओर तनी

बादल इतने सुन्दर
बड़बूले बहते
मेंढ़क गोल बना
अपनी बातें कहते

नाचो नाचो मोर
हुआ मौसम सुन्दर
ठण्डी-ठण्डी हवा
आ रही झर-झर-झर

बादल भैया, तुम थे
पर्वत के पीछे
कहाँ छिपे थे, नील
गगन में तुम नीचे

धरती बदली परती धरती
हरी हुई
नदी, खेत, रेती,
पानी से भरी हुई

पानी नहीं, बरसता
ऊपर से जीवन
फसल बरसती, सोना-चाँदी
धन ही धन।

चित्रः वासवी ओझा